राष्ट्रीय एकता और सूफी कवि

भारतवर्ष विभिन्न धर्मों, विभिन्न मतों और विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है। इतनी विभिन्नता के होने पर भी यहाँ एक ऐसी एकता पाई जाती है जो सारे देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। इतनी विभिन्नताओं में भी एकता के कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इस एकता का कारण समन्वय की भावना है। जीवन के सभी क्षेत्रों में (क्या व्यक्तिगत, क्या सामाजिक, क्या दार्शनिक) समन्वय की भावना व्याप्त है और इसी भावना ने देश को राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँध रखा है। 'राष्ट्रीय एकता' का ऐसा ही एक सुन्दर प्रयास हमें हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सूफी कवियों के काव्य में मिलता है।

भारतवर्ष में सूफी साधकों का प्रवेश मुस्लिम शासकों के साथ हुआ। मुस्लिम सत्ता के सुदृढ हो जाने के पश्चात ये सूफी साधक अन्य मुसलमानों की भाँति भारतीय हो गए। ये भारत में शान्ति के अग्रदूत बनकर आये और देश की जनता ने भी इनका खूब स्वागत किया। इस प्रकार सूफियों के तीन वर्ग मिलते हैं। सूफी साधक, सूफी दार्शनिक और सूफी कवि। इनमें से सूफी कवियों ने राष्ट्रीय एकता में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सूफी कवियों में मलिक मुहम्मद 'जायसी', 'कुतुबन' और मंझन के नाम उल्लेखनीय हैं।

अन्य धर्मो के महान पुरुषों एवं धार्मिक ग्रन्थों के प्रति इनकी दृष्टि उदार थी। ये जन भावनाओं से अधिक प्रभावित थे। अपने समय की परम्परागत जनश्रुतियों एवं विश्वासों को इन्होंने धर्म की मान्यता दे दी थी। सूफियों का यह समुदाय हिन्दू और मुसलमान दोनों ही समाजों को विशेष प्रिय था। इस कोटि के सूफी सन्तों के साहित्य में शास्त्रीय सिद्धान्तों के स्थान पर लोक - भावनाओं को अधिक महत्व दिया गया है। हिन्दी - काव्य के सूफी कवि सम्भवतः इसी कोटि के हैं। इन कवियों ने धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया।

वीरगाथा काल के समाप्त होते-होते देश पर मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित हो चुका था। वे विदेशी न रहकर यहीं के निवासी हो चुके थे। वे यहाँ के मूल निवासियों से एकता स्थापित करना चाहते थे। हिन्दू भी अब उनसे मिलने के इच्छुक थे, पर दोनों के धर्म और वाह्याचार इसमें बाधक थे। अब एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो दोनों के धर्मों तथा आचारों की समानताओं को सामने रखकर विषमताओं को दूर कर सकें। महात्मा कबीर ने इसी आवश्यकता की पूर्ति की। उन्होंने निराकार ब्रह्म की उपासना पर बल देकर जाति-पाति, छुआछूत और आडम्बरों का विरोध करते हुए दोनों धर्मों और सम्प्रदायों में एकता के मार्ग को प्रशस्त किया किन्तु उनके कथन में खण्डन - मण्डन की अधिकता के कारण अक्खड़पन तथा शुष्कता थी। इन कोमल स्वभाव के सूफियों ने किसी सम्प्रदाय विशेष का खंडन नहीं किया बल्कि उन्होंने दोनों जातियों के सांस्कृतिक समन्वय के लिए भरकस प्रयत्न किया और दोनों जातियों की एकता के उद्देश्य में इन्हें अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली। इसका प्रमुख कारण था, इनकी पद्धति मनोवैज्ञानिक थी। इन सूफी कवियों ने प्रेम का सुन्दर आदर्श सामने रखा और अपनी प्रेम गाथाओं द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि मानव-मात्र के हृदय में, चाहे वह किसी जाति अथवा धर्म से सम्बन्ध रखने वाला हो, प्रेमभावना का बीज समान रूप से मौजूद रहता है। जहाँ प्रेम है, वहाँ जाति, सम्प्रदाय अथवा मतमतान्तरों का भेद मिट जाता है। इस संबंध में आचार्य शुक्ल जी लिखते है ....

"प्रेम स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू और मुसलमानों दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया ..." आगे वे लिखते हैं ...

"कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था। सामने प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य रखने की आवश्यकता बनी थी। यह जायसी द्वारा पूरी हुई।"

सूफियों का मुख्य प्रतिपाद्य प्रेम है। ऐसा केवल इसलिए हुआ है कि सूफियों के निकट प्रेम ही मूल लक्ष्य है, प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही साध्य है और प्रेम को साधन बनाकर साक्षात् प्रेम को ग्रहण करने की उन्होंने चेष्टा भी की है। जायसी की दृष्टि में प्रेम का मार्ग सर्वोत्कृष्ट है। हृदय में जब तक प्रेम नहीं उत्पन्न होता, तप, यम, नियम, धर्म सब निरर्थक है। जायसी ने बड़े सुन्दर ढंग से अपने काव्य में प्रेम के महत्त्व पर प्रकाश डाला है - कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं ...

"कोटिक पोथी पढ़ि मरै, पंडित भा नहिं कोई।

एक अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होई ।। ''

''तीन लोक चौदह खंड, सबै परै मोहि सूझि ।
प्रेम छाड़ि नहि लोन कछु, जो देखा मन बूझि ।।

इसी प्रकार सूफियों ने दार्शनिक क्षेत्र में भी समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया । उन्होंने अपने दार्शनिक सिद्धान्त भारतीय दर्शन के आधार पर ही बनाए हैं । इन दर्शनों में भी एकता पर ही सर्वाधिक बल दिया गया है । 'अद्वैतवाद' और 'वहदतुलवुजूद' दर्शन में ब्रह्म और जीव की एकता सिद्ध कर, मानव जाति को एकता का ही सन्देश दिया गया है । सूफी कवि जायसी को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने विदेशी सूफी विचारधारा को भारतीय दार्शनिक विचारों से समन्वित करके उसे अपने युग के अनुरूप नया रूप दिया ।

इन प्रेम काव्यों के रचयिताओं ने हिन्दू घरानों की लोग प्रचलित कहानियों को अपने काव्य का विषय बनाया । उस युग में सांस्कृतिक समन्वय और संग्राहकता की भावनाएँ जागृत हो चुकी थीं । यह सूफी कवि भारतीय संस्कृति एवं धर्म से परिचित थे । उन्होंने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों, रहन-सहन और आचार - विचार का सुन्दर वर्णन किया है । हिन्दू पात्रों में, हिन्दू आदर्शों की प्रतिष्ठा की गई ।

यही कारण है कि इनकी प्रेमगाथाओं में हिन्दू घरों का बड़ा ही स्वाभाविक वर्णन किया गया है । जायसी के 'पद्मावत' में पद् मावती के विवाह के अवसर पर जो 'ज्यौनार' का वर्णन हुआ है उससे जायसी के हिन्दू धर्म के ज्ञान का परिचय मिलता है ।

सूफी कवियों ने फारसी एवं भारतीय परम्परा का सुन्दर समन्वय किया है । जायसी ने पद्मावत की रचना फारसी मसनवी शैली पर की है । कथा का खंडों में विभाजन (जन्म - खंद, मानसरोदक - खंड, प्रेम-खंड आदि), कथारम्भ के पूर्व ईश्वर स्तुति, मुहम्मद साहब आदि पैगम्बरों और तत्कालीन शासक शेरशाह की वंदना, आत्मपरिचय, छोटी-छोटी बातों का विस्तृत वर्णन, विरह-वर्णन आदि बातें मसनवी - शैली में अपनायी गयी हैं । इसके साथ ही उन्होंने षट्ऋतु, बारहमासा, रस, अलंकार और चरित्र - चित्रण आदि की दृष्टि से भारतीय परम्परा का अनुसरण किया है ।

भारत में प्रचलित लोक-कथाओं को जनसाधारण की अवधी भाषा में प्रस्तुत करके, प्रेम की पीर की व्यंजना की थी । इन सूफी कवियों में निष्ठा की एकता, भावों की व्यापकता, भाषा की सरसता तथा शैली की सरसता के कारण, इनका भक्तिकाव्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

सूफीमत सदैव आत्मा के शुद्धीकरण और प्रेम पर जोर देता रहा है । भारत के सूफी कवियों ने भी ऐसा ही किया है । उन्होंने संकीर्णताओं से ऊपर उठकर जीवन को उदात्त बनाने का संदेश दिया । इस प्रकार सूफी प्रेमारव्यान एक आदर्श स्वरूप प्राप्त करता है जो अपने आप में अद्भुत है । यही विशेषता इनकी लोकप्रियता का कारण है जो दोनों सम्प्रदायों को आकर्षित करती है तथा उनके बीच के वैमनस्य को दूर कर उन्हें एक दूसरे के करीब लाती है जो इनका महत्उद्देश्य है । इसी में इनकी सबसे बड़ी सफलता भी है । इसी भावना में राष्ट्रीयत्व एकता का समग्र रूप देखने को मिलता है ।

सूफी कवियों ने सम्पूर्ण मानव जाति का यह सन्देश दिया कि अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ एवं पारस्परिक वैमनस्य को त्यागकर जब मानव पारस्परिक प्रेम भाव से राष्ट्र के विकास में सहयोग देगा तभी एक सुन्दर राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा ।

इस प्रकार सूफी कवियों ने राष्ट्रीय एकता में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

- डॉ. इशरत खान
'हिन्दी विभाग'
गोवा विश्वविद्यालय

दूसरों के साथ वैसी ही उदारता बरतो
जैसी ईश्वर ने तुम्हारे साथ बरती है ।